International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2022; 2(2): 131-138
www.educationjournal.info
Received: 03-09-2022
Accepted: 05-11-2022

अंकिता कुमारी
रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

डॉ सपना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
अंकिता कुमारी
रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

बिहार राज्य में महिला शिक्षा के समक्ष चुनौतियां एवम किए गए प्रयास

अंकिता कुमारी और डॉ सपना शर्मा

DOI: https://doi.org/10.22271/27891607.2022.v2.i2b.92

सार
शिक्षा हमेशा से आर्थिक और सामाजिक विकास की नींव रही है और यह 21वीं सदी की ज्ञान अर्थव्यवस्थाओं के लिए आवश्यक होगी। शिक्षा स्वयं को कई तरह से प्रकट करती है जैसे संज्ञानात्मक सोच, सकारात्मक विचार प्रणाली आदि। यह समाज के लिए कल्याण लाती है। महिलाओं की शिक्षा न केवल सामाजिक न्याय के आधार पर महत्वपूर्ण है, बल्कि इसलिए भी कि यह सामाजिक परिवर्तन को गति देती है। साक्षरता का स्तर और शैक्षिक प्राप्ति किसी भी समाज के विकास के महत्वपूर्ण संकेतक हैं और हम किसी भी समाज के विकास में ग्रामीण महिलाओं को बाहर नहीं कर सकते क्योंकि वे समाज की प्रगति में और बड़े पैमाने पर अर्थव्यवस्था में समान रूप से योगदान करते हैं।
बिहार (2004-14) में पिछले दशक में शिक्षा में असाधारण विकास हुआ है। बिहार सरकार द्वारा राज्य में शैक्षिक सुविधाओं तक पहुंच बढ़ाने के प्रयास सकारात्मक बदलाव के संकेत दे रहे हैं। 2001-11 के दौरान बिहार में महिला साक्षरता दर में सुधार (20 प्रतिशत अंक) सबसे अधिक था, जो उस अवधि के दौरान भारत के किसी भी राज्य द्वारा हासिल किया गया था। यद्यपि बढ़ती साक्षरता दर कुछ सकारात्मक परिणाम दिखा रही है, फिर भी साक्षरता को एक शिक्षित समाज का एकमात्र संकेत नहीं माना जा सकता है। दूसरी ओर बिहार में शिक्षा दर शहरी और ग्रामीण महिला (शहरी महिला साक्षरता 72.6% और ग्रामीण महिला साक्षरता 49.6% है) के साथ-साथ पुरुष और महिला आबादी के बीच व्यापक अंतर की विशेषता है। इस पत्र का उद्देश्य ग्रामीण बिहार की महिला शिक्षा स्तर की वर्तमान स्थिति पर ध्यान केंद्रित करना है और यह पत्र इससे जुड़े विभिन्न मुद्दों और चुनौतियों पर भी प्रकाश डालेगा। इस पत्र का अंतिम उद्देश्य इन सभी बाधाओं से निपटने के लिए कुछ उपायों का प्रदर्शन करना है।

मुख्य शब्द: महिला शिक्षा, महिला साक्षरता, सामाजिक विकास।

परिचय
भारत में शिक्षा सामाजिक और आर्थिक प्रगति की कुंजी है। लड़कियों की शिक्षा न केवल सामाजिक न्याय के आधार पर महत्वपूर्ण है, बल्कि इसलिए भी कि यह सामाजिक परिवर्तन को गति देती है। साक्षरता का स्तर और शैक्षिक उपलब्धि किसी भी समाज के विकास के महत्वपूर्ण संकेतक हैं और हम किसी भी समाज के विकास में महिलाओं को बाहर नहीं कर सकते क्योंकि वे मानव जाति का लगभग आधा योगदान करती हैं। भारतीय संस्कृति के "वेद पुराण" में प्रतिबिंबित, महिलाओं की पूजा की जा रही है जैसे लक्ष्मी मां, धन की देवी; सरस्वती माँ, ज्ञान के लिए; शक्ति के लिए दुर्गा मां। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की महिला साक्षरता दर 65.46% और विश्व औसत 79.7% है। और बिहार में महिला साक्षरता दर 53% है

और बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में यह 45% है। यह आवश्यक है क्योंकि उनके विचार और उनकी मूल्य प्रणालियाँ एक अच्छे परिवार, अच्छे समाज और अंततः एक अच्छे राष्ट्र के विकास का नेतृत्व करती हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे अच्छा तरीका शायद ज्ञान, कौशल और क्षमताओं के साथ महिलाओं को सशक्त बनाना है। 21वीं सदी में महिलाओं के वास्तविक सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही एकमात्र रास्ता है।

बिहार जनसंख्या के हिसाब से भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है, लगभग 85% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। नालंदा विश्वविद्यालय (estd.450CE) और अन्य जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों से सीखने का एक प्रमुख केंद्र रहा है। ग्रामीण बिहार में शिक्षा प्रणाली का वर्तमान परिदृश्यविद्यालयोंऔर कॉलेजों में बुनियादी ढांचे और अच्छी तरह से शिक्षित शिक्षकों की कमी है और प्राथमिक विद्यालयों में आवश्यकता से 37 प्रतिशत कम शिक्षक हैं और इनमें से ज्यादातर शिक्षक अनुपस्थित हैं और सरकार से अपना पूरा वेतन लेते हैं और इन सभी चीजों का प्रबंधन करने के लिए प्रबंधन की कमी है अब चीजें बदल रही हैं सरकार शिक्षा क्षेत्र पर सख्त कार्रवाई करती है वे हर सरकार पर बायोमेट्रिक लगाते हैं।विद्यालयोंऔर कॉलेजों में शिक्षकों की उपस्थिति लेने के लिए औरविद्यालयोंऔर कॉलेजों में अच्छा और पर्यावरण के अनुकूल बुनियादी ढाँचा बनाया।

स्कूलों में भाग लेने वाली ग्रामीण लड़कियों की संख्या अभी भी बढ़ रही है; ग्रामीण बिहार में निरक्षरता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रमुख चिंता का विषय है। हाल के एक अध्ययन से पता चला है कि पिछले एक दशक में बिहार की जनसंख्या में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह एक चिंताजनक दर है। यदि इसे नियंत्रित नहीं किया गया तो सभी विकास कार्य और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर शून्य हो जाएगी। इस बिंदु पर शिक्षा जनसंख्या को स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 2001-2011 (जनगणना, भारत) से बिहार में साक्षरता के स्तर में 16.3% की वृद्धि देखी गई। बिहार (2004-14) में पिछले दशक में शिक्षा में अभूतपूर्व विकास हुआ है। बिहार सरकार द्वारा राज्य में 2001-2015 की शैक्षिक सुविधाओं तक पहुंच बढ़ाने के प्रयास सकारात्मक बदलाव के संकेत दे रहे हैं। बिहार में साक्षरता दर 2001 में 47.0% से बढ़कर 2011 में 61.8% हो गई है और 2015 में 63.82% हो गई है।

2001-11 के दौरान बिहार की महिला साक्षरता दर में सुधार उस अवधि के दौरान भारत के किसी भी राज्य द्वारा हासिल किया गया सबसे अधिक था। स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की कुल संख्या और स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या में भी गिरावट आई है। दूसरी ओर, बिहार में शिक्षा दर पुरुष और महिला आबादी के बीच व्यापक अंतर की विशेषता है। इन्हें निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट किया जा सकता है।

शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाती है जब महिलाओं को शिक्षा मिलती है तो उन्हें अपने आसपास क्या हो रहा है और उनके मौलिक अधिकारों के बारे में पता चलता है। जीवन के विभिन्न पहलू हैं जैसे सामाजिक क्षेत्रों में वे संस्कृति के बारे में और आजकल क्या चलन में हैं, कानूनी पहलू में उन्हें पता चलेगा कि क्या गलत है और क्या सही है, आर्थिक क्षेत्रों में वे अपने घर की स्थिति के बारे में जानेंगे और उनके देश और राजनीति में सही निर्णय लेने के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है कि भविष्य में उनके लिए कौन काम करेगा।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन के मुख्य उद्देश्यों में निम्नलिखित शामिल थे

1. ग्रामीण बिहार में शिक्षा प्रणाली को जानना।
2. देश के आर्थिक विकास में महिलाओं के योगदान का अध्ययन करना।
3. महिला शिक्षा के महत्व और इसके सामाजिक निहितार्थ के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
4. महिलाओं को शिक्षित करने में विभिन्न मुद्दों और चुनौतियों का अध्ययन करना।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

1. तारा कानिटकर ने अपने शोध में विश्लेषण किया कि महिलाओं की शिक्षा जनसांख्यिकीय व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण चर है, जैसे विवाह की उम्र, प्रजनन, शिशु और बाल मृत्यु दर, प्रवास और श्रम बल की भागीदारी। हालांकि, 1981 की जनगणना के आंकड़ों से पता चलता है कि विभिन्न राज्यों, विशेषकर बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में महिलाओं की शिक्षा के संबंध में स्थिति उत्साहजनक नहीं है। लड़कियों को स्कूल भेजने और उन्हें स्कूल में बनाए रखने के लिए माता-पिता की ओर से बहुत उच्च स्तर की निरंतर प्रेरणा की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में बिहार में लड़कियों को कम से कम शिक्षा देने के संबंध में परिवार में माता-पिता/निर्णायकों की आकांक्षाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन से पता चला है कि बिहार के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा की

आकांक्षा लड़कों की तुलना में हमेशा कम थी। लगभग 23 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय थी कि लड़कियों को केवल सबसे कम शिक्षा दी जानी चाहिए, यानी उन्हें साक्षर बनाने के लिए।

2. बलबीर कुमार, (2013) ने पाया कि शिक्षा आजीवन चीजों को सीखने की प्रक्रिया है; यह हमेशा शिक्षार्थियों पर केंद्रित होता है। शिक्षा मानव जाति के जीवन और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा समाज की बेहतरी के लिए मनुष्य के बीच ज्ञान, जागरूकता और दृष्टिकोण पैदा करती है। एक मानव अधिकार के रूप में, 21वीं सदी में शिक्षा व्यक्ति को रचनात्मकता की ओर निर्देशित करती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली दुनिया की सबसे बड़ी प्रणाली है जहां प्राथमिक, मध्य, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और कॉलेज व्यक्तियों के व्यक्तित्व को तेज करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन हमारे देश की शिक्षा प्रणाली के रास्ते में कई बाधाएं हैं कि बड़ी संख्या में स्कूल जाने वाले बच्चे माध्यमिक शिक्षा पूरी करने से पहले स्कूल प्रणाली को लगातार छोड़ रहे हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां पुरुष और महिला का लिंगानुपात 1000:940 है। देश की शिक्षा प्रणाली में जहां पुरुष प्रधान समाज मौजूद है, वहां हर जगह लिंग भेद देखा जा सकता है। अतः शिक्षाविद को लड़कियों की विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति जागरूक होना चाहिए। कई समितियों और आयोगों के गठन के बाद भी लड़कियों की नामांकन दर में दिन-ब-दिन गिरावट आ रही है। जो लोगविद्यालयोंमें नामांकित हैं, वे पर्याप्त सुविधाओं की कमी के कारण पर्याप्त रूप से तैयार नहीं हैं।
3. स्वर्ण जयवीरा, (2010) के अध्ययन से पता चलता है कि शिक्षा को व्यापक रूप से महिलाओं की स्थिति के संकेतक के रूप में माना जाता है । यह लेख संयुक्त राष्ट्र मानव विकास रिपोर्ट, 1995 में प्रस्तुत एशिया के देशों पर मैक्रो आँकड़ों का उपयोग करते हुए शिक्षा और सशक्तिकरण के कई पहलुओं के बीच संबंधों की जांच करता है, जो देश विशिष्ट 'लैंगिक सशक्तिकरण उपायों' की गणना करने का प्रयास करता है, साथ ही गुणात्मक से डेटा चयनित प्रतिनिधि देशों में अध्ययन। अध्ययन का निष्कर्ष है कि लैंगिक विचारधाराओं और सामाजिक और आर्थिक संरचनात्मक बाधाओं के इंटरफेस के परिणामस्वरूप शिक्षा और महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण के बीच कोई सकारात्मक रैखिक संबंध नहीं है। यह आगे उन कारकों की जांच करता है जो शिक्षा संरचनाओं और सामग्री के भीतर और सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं और परिवार के भीतर लिंग संबंधों से सामने आते हैं जो महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक एजेंट के रूप में शिक्षा की भूमिका को बाधित करते हैं।

कार्यप्रणाली

यह अध्ययन विभिन्न स्रोतों से प्राप्त द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। पत्रिकाएं, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, यूएनडीपी की रिपोर्ट, साहित्य की समीक्षा और माध्यमिक स्रोतों का विश्लेषण, सरकारी दस्तावेज, जनगणना रिपोर्ट, अधिकृत सूचना, शोध पत्र, मोनोग्राम और रिकॉर्ड स्रोत और अन्य अप्रकाशित कार्य जैसे अप्रकाशित थीसिस और वेबसाइट आदि। यह पेपर बिहार के विशेष संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की शिक्षा को उजागर करने का प्रयास है । वर्तमान परिदृश्य के आलोक में, इस अध्ययन का उद्देश्य बिहार में महिला शिक्षा की वर्तमान स्थिति, कारणों और ऐसी समस्याओं के संभावित उपचार पर प्रकाश डालना है। यह अध्ययन खोजपूर्ण प्रकृति का है और इस उद्देश्य के लिए उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों का हवाला देकर गहन विश्लेषण किया गया है।

चर्चा और निष्कर्ष

समाज में ग्रामीण महिलाओं का योगदान

ग्रामीण महिलाएं और लड़कियां वैश्विक आबादी का एक चौथाई हिस्सा बनाती हैं। वे विकसित और विकासशील दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विकासशील दुनिया के अधिकांश हिस्सों में वे फसल उत्पादन और पशुधन देखभाल में भाग लेते हैं, अपने परिवारों के लिए भोजन, पानी और ईंधन प्रदान करते हैं, और अपने परिवारों की आजीविका में विविधता लाने के लिए गैर-कृषि गतिविधियों में संलग्न होते हैं। इसके अलावा, वे बच्चों, वृद्ध व्यक्तियों और बीमारों की देखभाल में महत्वपूर्ण प्रजनन कार्य करते हैं। वे ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश अवैतनिक देखभाल कार्य करते हैं और कृषि श्रम बल का एक प्रमुख हिस्सा हैं, जो लगभग आधा अरब छोटे किसान और भूमिहीन श्रमिक हैं। भारत में महिलाएं कृषि क्षेत्र में प्रमुख कार्यबल बनाती हैं। भारत में 71% से अधिक महिलाएं खेतिहर मजदूरों के रूप में काम करती हैं जो 82% से अधिक हो जाती हैं जब यह केवल ग्रामीण भारत तक ही सीमित होती है। इसका मतलब है कि महिलाएं ज्यादातर काम कर रही हैं जिनमें बुवाई, निराई, कटाई, ढोना आदि शामिल हैं। वे हमारे समाज में सतत विकास के लिए आवश्यक

परिवर्तनकारी आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक परिवर्तनों को प्राप्त करने के लिए प्रमुख एजेंट हैं। भारत में आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी ने पिछले कुछ दशकों में जबरदस्त वृद्धि दिखाई है। लेकिन राज्य बिहार में अन्य राज्यों की तुलना में सबसे कम महिला कार्यबल की भागीदारी है।

बिहार में महिला साक्षरता

एच. सुब्रह्मण्यम (2011) भारत में वर्तमान और अतीत में महिला शिक्षा की तुलना करता है। लेखक ने इस बात पर प्रकाश डाला किविद्यालयोंमें छात्राओं के समग्र नामांकन में अच्छी प्रगति हुई है।विद्यालयोंमें भाग लेने वाली ग्रामीण लड़कियों की संख्या अभी भी बढ़ रही है; ग्रामीण बिहार में निरक्षरता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रमुख चिंता का विषय है। हाल के एक अध्ययन से पता चला है कि पिछले एक दशक में बिहार की जनसंख्या में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह एक चिंताजनक दर है। यदि इसे नियंत्रित नहीं किया गया तो सभी विकास कार्य और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर शून्य हो जाएगी। इस बिंदु पर शिक्षा जनसंख्या को स्थिर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बिहार ने 2001-2011 (जनगणना, भारत) से साक्षरता के स्तर में 16.3 प्रतिशत अंक की वृद्धि देखी। बिहार (2004-14) में पिछले दशक में शिक्षा में अभूतपूर्व विकास हुआ है। बिहार सरकार द्वारा राज्य में शैक्षिक सुविधाओं तक पहुंच बढ़ाने के प्रयास सकारात्मक बदलाव के संकेत दे रहे हैं। बिहार में साक्षरता दर 2001 में 47.0% से बढ़कर 2011 में 61.8% से 2015 में 63.82% हो गई है। 2001-11 के दौरान बिहार की महिला साक्षरता दर में सुधार (20 प्रतिशत अंक) उस दौरान भारत में किसी भी राज्य द्वारा हासिल किया गया सबसे अधिक था। अवधि। स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की कुल संख्या और स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या में भी गिरावट आई है। 2001-15 की अवधि के दौरान उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई।

यद्यपि बढ़ती साक्षरता दर कुछ सकारात्मक परिणाम दिखा रही है, फिर भी साक्षरता को एक शिक्षित समाज का एकमात्र संकेत नहीं माना जा सकता है। दूसरी ओर, बिहार में शिक्षा दर शहरी और ग्रामीण महिलाओं के साथ-साथ पुरुष और महिला आबादी के बीच व्यापक अंतर की विशेषता है। इन्हें निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट किया जा सकता है –

बिहार में कुल साक्षरता

क्र.सं.	विवरण	संख्या
1.	पुरुष साक्षरता की कुल संख्या	6,69,57,706
2.	महिला साक्षरता की कुल संख्या	4,69,78,655
	कुल साक्षरों की संख्या	11,39,36,361

स्रोत- जनगणना 2011 रिपोर्ट

बिहार में साक्षरता दर

क्र.सं.	विवरण	कुल (%)	पुरुष (%)	महिला (%)
1	कुल साक्षरता	63.82%	73.39%	53.53%
2	कुल ग्रामीण साक्षरता	53.9%	67.1%	49.6%
3	कुल शहरी साक्षरता	81.9	89.9	72.6

स्रोत- जनगणना 2011 रिपोर्ट

उपरोक्त तथ्य और आंकड़े स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि पुरुष साक्षरता और महिला साक्षरता की तुलना करते समय और साथ ही बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी क्षेत्रों की साक्षरता दर में एक बड़ा अंतर मौजूद है। यह यह भी दिखा रहा है कि बिहार की श्रम शक्ति की भागीदारी और श्रमिक आबादी भी भारत के अन्य हिस्सों की तुलना में कम है। यद्यपि बिहार पिछले दस वर्षों में समग्र साक्षरता दर के मामले में कुछ सकारात्मक संकेत दिखा रहा है, फिर भी; यह सूची में सबसे नीचे है। ग्रामीण बिहार की महिला साक्षरता दर भारत के अन्य राज्यों की तुलना में सबसे कम है।

ग्रामीण बिहार की महिला साक्षरता के मुद्दे और चुनौतियां

यद्यपि ग्रामीण महिलाएं कृषि और अर्थव्यवस्था की उन्नति में और बड़े पैमाने पर समाज के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, हमारे समाज की ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न कारणों से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जैसे- लिंग भेदभाव, महिलाओं तक अपर्याप्त पहुंच। स्वास्थ्य देखभाल आदि। उनके पास चिकित्सा सेवाओं तक हल्की पहुंच, कम आय, सीमित विरासत और भूमि अधिकार भी हैं। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं नौकरी की सुरक्षा से वंचित हैं। अन्याय, हिंसा और असुरक्षा ऐसे प्रमुख मुद्दे हैं जो ग्रामीण समाज में बने रहते हैं। इन सभी मुद्दों के पीछे अंतिम कारण ग्रामीण बिहार की महिलाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी है। बाल विवाह और लैंगिक असमानता जैसे अन्य ज्वलंत सामाजिक मुद्दे हैं जो कई सामाजिक समस्याओं के कारण हैं। लड़कियों की शिक्षा से भी इनसे निपटा जा सकता है।

बिहार सरकार ने सभी के लिए शिक्षा के प्रति एक मजबूत प्रतिबद्धता व्यक्त की है; हालाँकि राज्य में अभी भी एशिया में सबसे कम ग्रामीण महिला साक्षरता दर है। साक्षरता का यह निम्न स्तर न केवल ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर बल्कि उनके परिवारों के

जीवन और उनके देश के आर्थिक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है।

निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं जो ग्रामीण बिहार की महिलाओं की कम साक्षरता दर को प्रभावित कर सकते हैं-

- **लड़कियों के लिए खराब स्कूल का माहौल-**
  सामान्य तौर पर ग्रामीण बिहार में लड़कियों के लिए स्कूल का माहौल वास्तव में दिलचस्प और उत्साहजनक नहीं है। पीने के पानी, शौचालय की सुविधा, अनुचित भवन और शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या, विशेष रूप से महिला शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या के साथ कई स्कूल अभी भी अपनी बालिकाओं की सुरक्षा के लिए किसी भी माता-पिता के लिए विभिन्न प्रकार के शोषण और दुर्व्यवहार से बेहतर हैं।

- **पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कम नामांकन**
  लड़कियों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख शैक्षिक समस्या यह है कि यद्यपि उन्हें वर्ष की शुरुआत में नामांकित किया जा सकता है, वे हमेशा स्कूल में नहीं रहती हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियों को साझा करने के लिए लड़कियों को अक्सर स्कूल से निकाल दिया जाता है। निम्न जाति के परिवारों के बच्चों को कौशल सीखने और काम करने के लिए मजबूर किया जाता है और उन्हें घरेलू नौकर के रूप में रखने के अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए उच्च जाति समुदायों से सख्त निर्देश के क्षेत्र में विभिन्न कारकों के कारण स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। विश्व बैंक द्वारा एकत्र किए गए स्कूल में उपस्थिति के आंकड़ों से पता चलता है कि स्कूल जाने वाली लड़कियों का अनुपात उम्र के साथ घटता जाता है जबकि लड़कों के लिए यह स्थिर रहता है।

- **दहेज प्रथा**
  ग्रामीण बिहार में, दहेज का तात्पर्य टिकाऊ सामान, नकद और वास्तविक या चल संपत्ति से है जो दुल्हन का परिवार दूल्हे, उसके माता-पिता या उसके रिश्तेदारों को शादी की शर्त के रूप में देता है। ऐसा माना जाता है कि दहेज प्रथा दुल्हन के परिवार पर भारी आर्थिक बोझ डालती है। दहेज प्रथा और अन्य सामाजिक कार्य बालिकाओं की उपेक्षा और शिक्षा के अधिकार से वंचित करने सहित बालिकाओं के साथ भेदभाव के मुख्य कारण हैं। कुछ मामलों में, दहेज प्रथा महिलाओं के खिलाफ भावनात्मक शोषण, चोट से लेकर मौत तक के अपराध की ओर ले जाती है।

- **जल्दी शादी**
  भारत में बाल विवाह, भारतीय कानून के अनुसार, एक ऐसा विवाह है जिसमें या तो महिला की आयु 18 वर्ष से कम है या पुरुष की आयु 21 वर्ष से कम है। अधिकांश बाल विवाह में कम उम्र की महिलाएं शामिल होती हैं, जिनमें से कई खराब सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में होती हैं। बिहार भारत में सबसे अधिक बाल विवाह दर वाला राज्य है। वर्ष 2009 में ग्रामीण क्षेत्रों में शीघ्र विवाह की दर शहरी भारत की दर से तीन गुना अधिक थी और अब भी यह उच्च स्तर पर है। विवाह के समय महिला साक्षरता का महिला आयु के साथ उच्च संबंध है। कुल मिलाकर भारत में विभिन्न विधानों द्वारा निर्धारित 18 वर्ष की आयु में महिला की आयु का पालन नहीं किया जाता है। कम साक्षरता वाले माता-पिता के परिवारों द्वारा इसे बहुत अधिक अनदेखा और उपेक्षित किया जाता है।

- **बेटी की शिक्षा की तुलना में बेटे की शिक्षा को प्राथमिकता-**
  कई माता-पिता बेटों को शिक्षित करने को एक निवेश के रूप में देखते हैं क्योंकि बेटे बूढ़े माता-पिता की देखभाल करने के लिए जिम्मेदार होंगे। दूसरी ओर माता-पिता बेटी की शिक्षा को पैसे की बर्बादी के रूप में देख सकते हैं क्योंकि बेटी अंततः अपने पति के परिवारों के साथ रहेगी और माता-पिता को उनकी शिक्षा से सीधे लाभ नहीं होगा।

- **गरीबी**
  गरीबी ग्रामीण बिहार में निरक्षरता का एकमात्र सबसे बड़ा कारण है और अन्य सभी प्रभावों का अग्रदूत है। पूरे राज्य में ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से बहुत गरीब पाई जाती हैं। कुछ महिलाएं सेवाओं और अन्य गतिविधियों में लगी हुई हैं। इसलिए, उन्हें पुरुषों के साथ अपने पैरों पर खड़े होने के लिए आर्थिक शक्ति की आवश्यकता है। गरीबी को दुनिया में शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा माना जाता है। सेक्स गुलाम गरीबी का प्रत्यक्ष परिणाम हैं। एक गरीब परिवार में, लड़कियां मुख्य शिकार होती हैं; वे कुपोषित हैं और उन्हें बेहतर शिक्षा और अन्य सुविधाओं के अवसर से

वंचित रखा जाता है। यदि गरीबी चिंता का विषय नहीं होती, तो बालिकाएँ यौन शोषण, घरेलू शोषण और किसी भी शिक्षा या काम की चिंता के बिना अपने सपनों का पालन करने में सक्षम होंगी। कई अध्ययनों से पता चलता है कि निरक्षर महिलाओं में उच्च स्तर की प्रजनन क्षमता, खराब पोषण की स्थिति, कम कमाई की क्षमता और घर के भीतर कम स्वायत्तता होती है।

- **पर्याप्त संख्या में महिला शिक्षकों का अभाव**
  महिला शिक्षा में एक और बाधा महिला शिक्षकों की कमी है। चूंकि भारत एक लिंग-पृथक समाज है, इसलिए यह कम महिला साक्षरता दर का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है। यह लड़कियों की शिक्षा में आने वाली बाधाओं में से एक है। लड़कियों के स्कूल जाने की संभावना अधिक होती है और यदि उनके पास महिला शिक्षक हैं तो उनकी उच्च शैक्षणिक उपलब्धि है। यह भारत जैसे अत्यधिक लिंग-पृथक समाजों में विशेष रूप से सच है (बेलेव एंड किंग, 1993; किंग, 1990)।

- **जातिगत असमानताएं**
  गंभीर जातिगत असमानताएं भी मौजूद हैं। विशेष रूप से, यह बिहार के ग्रामीण हिस्से में उच्च स्तर पर है। निचली जातियों के भेदभाव के परिणामस्वरूप उच्च ड्रॉपआउट दर और कम नामांकन दर हुई है। लेकिन सभी कारणों के बावजूद, महिलाओं को यह समझना और महसूस करना चाहिए कि शिक्षा वास्तव में गरीबी के जीवंत चक्र, उनके दुर्भाग्य को समाप्त कर सकती है, ताकि वे गर्व के साथ जीवन जी सकें। जीवन में किसी भी दुर्भाग्य के मामले में, वह शिक्षा है जो उसकी मदद करेगी, और कुछ नहीं। सरकार को वास्तव में ग्रामीण और शहरी भारत मेंविद्यालयोंकी संख्या, दूरी और गुणवत्ता की दिशा में काम करना चाहिए। हमें एक संतुलित और शिक्षित समाज बनाने के लिए बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

ग्रामीण महिला शिक्षा की बेहतरी के लिए सहयोगात्मक प्रयास और प्रोत्साहन

महिला शिक्षा के कारण ने कई संगठनों और सरकारों के प्रयासों को आकर्षित किया है, और विभिन्न पहलों ने वित्तीय प्रोत्साहन, अनौपचारिक प्रशिक्षण, शिक्षा क्षेत्र में महिलाओं की भर्ती और सामुदायिक जुड़ाव के महत्व को साबित किया है। शिक्षकों को लड़कियों की शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करने और विशेष रूप से ग्रामीण लड़कियों को विकास के मुख्य प्रवाह में आने में सक्षम बनाने के लिए वित्तीय प्रोत्साहनों का उपयोग किया गया है। ग्रामीण बिहार में महिला शिक्षा की बेहतरी के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर की गई कुछ प्रमुख पहल निम्नलिखित हैं-

बिहार सरकार द्वारा शैक्षिक योजनाएं

बिहार में अल्पसंख्यक समुदायों से संबंधित छात्रों के लिए मौलाना आजाद नेशनल फेलोशिप के तहत जारी फंड (2011-2012 से 2014-2015-24.02.2015 तक)।

बिहार में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) संचालन और लड़कियों का नामांकन (2011-2012 से 2014-2015)

सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) (1987-2016)

यह एक भारतीय प्रोग्राम है जिसका उद्देश्य प्रारंभिक शिक्षा को "समयबद्ध तरीके से" सार्वभौमिक बनाना है, जैसा कि भारत के संविधान में 86 वें संशोधन द्वारा अनिवार्य है, जिसमें 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा एक मौलिक अधिकार है। इस कार्यक्रम का नेतृत्व पूर्व भारतीय प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया था।

बालिका पोषण योजना

मिडिल स्कूल में लड़कियों को स्कूल यूनिफॉर्म उपलब्ध कराने की योजना के तहत छठी से आठवीं तक की छात्राओं को बालिका पोषण योजना के तहत दो जोड़ी यूनिफॉर्म खरीदने पर हर साल 700 रुपये दिए जाते हैं।

मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना

मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना के तहत सभी लड़कियों को नौवीं कक्षा में प्रवेश लेने के बाद राज्य सरकार द्वारा नि:शुल्क साइकिल दी जानी है। यह योजना निर्धारित समय के भीतर साइकिल खरीदने के लिए प्रति बालिका 2,000 रुपये के नकद हस्तांतरण को अनिवार्य करती है।

मुख्यमंत्री अक्षर आँचल योजना

महिलाओं में उच्च स्तर की निरक्षरता को दूर करने के लिए सितंबर 2009 में बिहार सरकार द्वारा यह वयस्क साक्षरता कार्यक्रम शुरू किया गया था। 52.6 करोड़ रुपये के आवंटन के साथ इसका उद्देश्य 6 महीने की अवधि के भीतर 15-35 वर्ष की आयु वर्ग की 40 लाख निरक्षर महिलाओं को साक्षर बनाना है।

यह पाया गया कि सर्वेक्षण गांवों में कई महिलाओं ने इस वयस्क साक्षरता कार्यक्रम में भाग लिया। अक्षर आंचल योजना गरीब समुदायों में अनपढ़ महिलाओं के बीच लोकप्रिय थी। स्कूल के समय के बाद आमतौर पर कक्षाएं स्थानीय स्कूल में आयोजित की जाती थीं।

महिला अक्षर आँचल योजना

इसने बहुत अच्छे परिणाम दिखाए हैं और इस योजना के तहत आने वाली 40 लाख महिलाओं में से 35 लाख से अधिक को पहले ही साक्षर बनाया जा चुका है। इसने किसी भी अन्य राज्य की तुलना में राज्य में दशकीय साक्षरता वृद्धि को बढ़ाने में मदद की।

निष्कर्ष

सरकार ही नहीं बल्कि हर साक्षर नागरिक को निरक्षरता की बुरी आत्मा से लड़ने में अपना योगदान देना चाहिए। हमारा आदर्श वाक्य होना चाहिए "हर एक एक सिखाता है", अगर हमें एक विकसित राज्य बनना है। अब युवाओं की बारी है कि वे इस राज्य की ग्रामीण महिलाओं को साक्षरता के प्रकाश की ओर ले जाने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लें। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति, बराक ओबामा ने कहा, "यदि हम किसी अन्य व्यक्ति या किसी अन्य समय की प्रतीक्षा करते हैं तो परिवर्तन नहीं आएगा। हम वे हैं जिसके लिए हम प्रतीक्षा करते रहे हैं। जिस परिवर्तन को हम चाहते हैं, वही परिवर्तन हम हैं"। बदलाव का समय अब है। ग्रामीण महिलाओं की स्थिति और भूमिका को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। नारीकृत गरीबी को कम करने, महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने और महिलाओं के खिलाफ हिंसा की रोकथाम और उन्मूलन, विशेष रूप से हमारे समाज के ग्रामीण हिस्से को तैयार करने की आवश्यकता है।

सरकार के साथ-साथ गैर सरकारी संगठन इस समस्या को हल करने के लिए काम कर रहे हैं कि हम ग्रामीण बिहार में बच्चों और महिलाओं दोनों के लिए निरक्षरता को कैसे मिटा सकते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षा की पहुंच के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित उपाय सहायक हो सकते हैं-

1. बेहतर स्कूली शिक्षा कार्यक्रम बनाना।
2. राज्य के ग्रामीण हिस्से में बेहतर स्वास्थ्य देखभाल को और अधिक सुलभ बनाना।
3. बेटे की वरीयता जिसके परिणामस्वरूप लड़कियों में लिंग असंतुलन और अधिक मृत्यु दर हुई है, को संबोधित करने की आवश्यकता है।
4. शिक्षण की गुणवत्ता के साथ उपयुक्त छात्र-शिक्षक अनुपात प्राप्त करना।
5. ड्रॉप आउट बच्चों को वापस लाएं।
6. सरकार द्वारा समय-समय पर लागू की गई कल्याणकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार का पता लगाने के लिए उचित निगरानी।
7. पर्याप्त संख्या में स्कूल और शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध कराना ताकि लड़कियों को लंबी दूरी की यात्रा न करनी पड़े।
8. राज्य के ग्रामीण हिस्से में भी व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दें।
9. शिक्षा में करियर उन्मुख दृष्टिकोण को बढ़ावा देना।
10. लड़कियों को अपनी पसंद का क्षेत्र चुनने के लिए प्रेरित करें।
11. वर्तमान असंतुलन को दूर करने के लिए, मौजूदा संस्थानों का समर्थन करके, नए संस्थानों की स्थापना करके, सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों का समर्थन करके, नागरिक समाज को सार्वजनिक प्रयासों के पूरक के लिए पहुंच का विस्तार करना।
12. अभी तक वंचित समुदायों को शामिल करने के लिए बुनियादी ढांचे और संकाय में निवेश करके, अकादमिक सुधारों को बढ़ावा देने, शासन में सुधार और संस्थागत पुनर्गठन द्वारा उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देना।

उपर्युक्त विधियों के अलावा, संचार और मीडिया की विधि संवाद और बहस को प्रोत्साहित करके विकास की सुविधा प्रदान कर सकती है। इसके अलावा, वे ग्रामीण महिलाओं को आवाज दे सकते हैं, इस प्रकार उन्हें अपने स्वयं के विकास एजेंडा को स्पष्ट करने में सक्षम बनाते हैं।

इसी तरह, ज्ञान और सूचनाओं के आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर, संचार महिलाओं की जागरूकता और प्रेरणा को प्रोत्साहित कर सकता है, जिससे उन्हें अपने जीवन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों पर सूचित निर्णय लेने की अनुमति मिलती है और शिक्षा ऐसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक है।

एक तरह से शिक्षित महिलाएं अपने जीवन के साथ-साथ अपने जीवन की गुणवत्ता और अपने पूरे परिवार का भी उत्थान कर सकती हैं।

जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था, "एक आदमी को शिक्षित करें, आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन एक महिला को शिक्षित करते हैं, आप पूरी सभ्यता को शिक्षित करते हैं।"

गांधी का मानना था कि महिलाएं सभी स्तरों पर भारत को बदलने के लिए बहुत कुछ कर सकती हैं। आइए आज हम बालिकाओं के लिए समानता का माहौल बनाने का संकल्प लें। आइए समाज से इस खतरे को

दूर करने के लिए मिलकर काम करें। हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है, लेकिन किसी दिन हम वहां पहुंचेंगे।

संदर्भ

1. Ballara M. Women and Literacy. Atlantic Highlands, NJ: Zed Books; c1992.
2. Baruah B. Role of Electronic Media in Empowering Rural Women Education of N.E. India. ABHIBYAKTI: Annual Journal. 2013;1:23-26.
3. Chen M. Progress of the Worlds' Women 2005: Women, Work and Poverty. UNIFEM New York; c2005. p.75-83.
4. Goswami L. Education for Women Empowerment. ABHIBYAKTI: Annual Journal. 2013;1:17-18.
5. Kadam RN. Empowerment of Women in India- An Attempt to Fill the Gender Gap. International Journal of Scientific and Research Publications. 2012;2(6):11-13.
6. King Elizabeth M. Educating Girls and Women: Investing in Development, Washington, DC. 1990.
7. Lagemann EC. A Generation of Women: Education in the Lives of Progressive Reformers. Cambridge, MA: Harvard University Press. 1979.
8. Marshal A. Organizing Across the Divide; Local Feminist Activism, Everyday Life and the Election of Women to Public Office. Soc. Sci. Q. 2002;83(3):707-725.
9. Nussbaum MC. Women and Human Development: The Capabilities Approach. New York, NY: Cambridge University Press. 2000.
10. Nagaraja B. Empowerment of Women in India: A Critical Analysis. Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS). 2013;9(2):45-52. Available on-URL http: www.Iosrjournals.Org/empowerment.html.
11. Vinze Medha Dubashi. Women Empowerment of Indian: A Socio-Economic study of Delhi. Mittal Publications, Delhi. 1987.
12. http://www.educationbihar.gov.in
13. http://www.ibnlive.com/news/india/bihar-government-to-declare-women-empowerment- policy-972108.html
14. http://thevoiceofyouth.com/2012/12/30/rural-women-the-great-strength-of-society
15. http://www.biharstat.com/education/6370/educationalschemes/6374/stats.aspx
16. http://gov.bih.nic.in/Welfare.htm